कमल मंदिर-दिल्ली के अतिशयकारी

भगवान ऋषभदेव

(स्तुति संग्रह एवं पूजा)

कमल मंदिर, दिल्ली में विराजमान भगवान ऋषभदेव

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

हस्तिनापुर में निर्मित विश्व की अद्वितीय जम्बूद्वीप रचना

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 518
ISBN 978-93-87891-42-5

कमल मंदिर-दिल्ली के
अतिशयकारी
भगवान ऋषभदेव
(स्तुति संग्रह एवं पूजा)

-रचयित्री-

भारतगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भारत की राजधानी दिल्ली में प्रीतविहार कालोनी में दिव्यशक्ति, भारतगौरव, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित भगवान ऋषभदेव कमल-मंदिर में विराजमान भगवान श्री ऋषभदेव प्रतिमा के 24वें प्रतिष्ठापना दिवस ज्येष्ठ शु. दशमी, वी. नि. सं. 2546 (1 जून 2020) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2546	मूल्य
1100 प्रतियाँ	ज्येष्ठ शु. दशमी, 1 जून 2020	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादकः-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।
सर्वाविद्याकलायस्मादाविर्भूता महीतले।।

युगादि ब्राह्मा, आदिपुरुष, आदितीर्थंकर, पुरुदेव, ऋषभदेव आदि नामों से सुशोभित भगवान ऋषभदेव का जितना गुणगान किया जाए, कम है। जिन्होंने प्रजा को जीने की कला सिखाई। असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प इन षट्क्रियाओं का उपदेश दिया।

भारतगौरव, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से राजधानी दिल्ली के प्रीतविहार में श्रावकरत्न श्री अनिल जैन की कोठी में निर्मित कमलमंदिर में भगवान ऋषभदेव की धातु की अतिशय मनोहर प्रतिमा विराजमान है, जिसका प्रतिदिन पंचामृत अभिषेक आर्ष परंपरा के अनुसार होता है। उसके प्रतिष्ठापना दिवस पर पूज्य माताजी की भावना भगवान ऋषभदेव के गुणगान की हुई और उन्होंने इस पुस्तिका में भगवान की स्तुति, पूजा, परिचय आदि के माध्यम से गुणगान एवं भगवान के दर्शन की महिमा का वर्णन किया है।

इस पुस्तक के माध्यम से चिरकाल तक भगवान ऋषभदेव एवं कमल-मंदिर का निर्माण कराने वाले श्रावकरत्न श्री अनिल जैन को याद किया जाएगा, जिन्होंने अपने जीवन में जिनमंदिर का निर्माण कराकर महान पुण्य का कार्य किया है एवं आर्ष परंपरा के अनुसार अभिषेक, पूजा आदि करके अमूल्यरत्न–सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया है।

श्रीमान् अनिल जी उनकी धर्मपत्नी अनीता जैन, पुत्र अतिशय जैन, सुपुत्री सौ. अनामिका एवं सौ. अन्तिमा जैन सहित उनका पूरा परिवार सौभाग्यशाली है, पुण्यशाली है। आगे भी वे इसी प्रकार से सम्यग्दर्शन में दृढ़ रहते हुए सच्चे देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति करते हुए अपने मानव जीवन को सफल करें, यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी दीर्घायु हों एवं स्वस्थ रहें और अपने ज्ञान के आलोक से हम सभी को भी प्रकाशित करती रहें, यही भगवान से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

श्री ऋषभो जगन्नाथः, त्वां ऋषभं दधे हृदि।
ऋषभेण जितो मृत्युः, ऋषभाय नमो नमः।।

जैनशासन में वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हुए हैं। जैन ग्रंथों के अनुसार आज से करोड़ों वर्ष पूर्व शाश्वततीर्थ अयोध्या में भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ। प्रयाग में भगवान ने दीक्षा धारण की, प्रयाग में ही पुरिमतालपुर के उद्यान में भगवान को दिव्य केवलज्ञान हुआ और कैलाशपर्वत से भगवान ने मोक्ष प्राप्त किया।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से दिल्ली प्रीतविहार में श्री अनिल जैन श्रावकरत्न ने अपने मकान के प्रांगण में भगवान ऋषभदेव कमलमंदिर का निर्माण कराया है जिसका भव्य पंचकल्याणक सन् 1997 में सानन्द संपन्न हुआ। श्री अनिल जैन, धर्मपत्नी श्रीमती अनीता जैन, सुपुत्री-श्रीमती अनामिका जैन, श्रीमती अंतिमा जैन, पुत्र श्री अतिशय जैन एवं चिरंजीव दिव्यांश जैन भाग्यशाली हैं, पुण्यशाली हैं, जिन्हें घर में निर्मित जिनमंदिर में भगवान का दर्शन, पंचामृत अभिषेक, पूजन, भक्ति आदि करने का सौभाग्य प्राप्त है।

पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव के जीवन पर संस्कृत, हिन्दी (काव्य) आदि में अनेकों स्तुतियां रची हैं जिनमें से कुछ स्तुतियों का संकलन कर इस छोटी सी पुस्तक **''भगवान ऋषभदेव स्तुति संग्रह एवं पूजा''** को तैयार किया है, इसमें सर्वप्रथम श्री गौतम स्वामी कृत वंदना है। इसके बाद भगवान ऋषभदेव की स्तुति संस्कृत (सप्तविभक्ति में), हिन्दी पद्य में, संस्कृत-छंद सहित में, ऋषभदेव के दशावतार से सम्बन्धित स्तुति एवं चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति दी है। इसके साथ भगवान ऋषभदेव की पूजा, जिनप्रतिमा के दर्शन का महत्त्व, भगवान ऋषभदेव का जीवन दर्शन एवं ऋषभदेव के दस अवतार के बारे में भी संक्षिप्त जीवनवृत्त लिखा है।

इस पुस्तक की प्रशस्ति में लिखा है कि भारत की राजधानी दिल्ली में प्रीतविहार कालोनी में कमल जिनालय के 24 वें प्रतिष्ठापना दिवस वीर नि.

सं. 2546 के ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को इस पुस्तक का संकलन किया है। इस कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा अतिशय महिमापूर्ण है। चूँकि यहाँ आर्षपरंपरा के अनुसार पूर्ण विधि-विधान के साथ प्रतिदिन अभिषेक-पूजा सातिशय भक्ति के साथ सम्पन्न होता है, इसीलिए यह प्रतिमा भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। श्रावक के समस्त कर्तव्यों का पालन करने वाले, श्रद्धा-समर्पण आदि गुणों से सम्पन्न श्री अनिल जैन एवं उनका परिवार बहुत ही पुण्यशाली है।

पुस्तक के अंत में भगवान ऋषभदेव की मंगल आरती है एवं भगवान ऋषभदेव कमलमंदिर के निर्माण एवं कार्यकलापों की प्रशस्ति दी है। पुनः राजधानी दिल्ली से सन् 2000 में प्रयाग की ओर मंगलविहार एवं उसके बाद के कार्यक्रमों में श्रावकरत्न श्री अनिल कुमार जैन की भूमिका एवं सहयोग का वर्णन है।

यह ''भगवान ऋषभदेव स्तुति संग्रह'' पुस्तिका भगवान ऋषभदेव के गुणों के साथ जिनमंदिर का निर्माण कराने वाले के पुण्य एवं सौभाग्य को भी बताने वाली है अतः धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविकाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

भगवान ऋषभदेव सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि को प्राप्त करावें, यही मंगल भावना है एवं पूज्य माताजी की अनुकम्पा सदा भक्तों पर बरसती रहे, यही भगवान से मंगल प्रार्थना है।

पंचमहापुरुष वंदना (लघु)

श्री ऋषभदेव श्री भरत बाहुबलि, ऋषभसेन व अनंतवीर्य।
ये प्रथमतीर्थकर प्रथम चक्र-वर्ति व प्रथम कामदेव शूर।।
श्री ऋषभसेन प्रथमहि गणधर व अनंतवीर्य शिव गये प्रथम।
इन प्रथम पंचयुगपुरुषों को, पंचम सुज्ञानमती हेतु नमन।।

दो शब्द

–आर्यिका स्वर्णमती (संघस्थ)

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 500 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम है।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचन्द्रिका'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ–साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिनों में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

प्रस्तुत पुस्तक **'भगवान ऋषभदेव स्तुति संग्रह एवं पूजा'** जो कि विशेषरूप से पूज्य माताजी ने कमल मंदिर, प्रीतविहार, दिल्ली के लिए संकलित की है। यह पुस्तक छोटी होते हुए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस पुस्तक को पढ़कर आप सभी अपने जीवन में सम्यग्दर्शन को धारण करें। सच्चे देव शास्त्र गुरु पर दृढ़ श्रद्धान करें। निःशंकित अंग का पालन करें। पूर्वाचार्यों द्वारा लिखित शास्त्र पर श्रद्धान करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों,स्वस्थ रहें, इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि।

21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील एवं 22 अक्टूबर 2018 को ऋषभदेवपुरम्-मांगीतुंगी (महा.) में माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द द्वारा पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का उद्घाटन।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (2015-2016) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृ. संख्या
1.	मंगलाचरण (श्री गौतमस्वामी कृत वंदना)	9
2.	श्री ऋषभदेव स्तुति (सप्तविभक्ति समन्वित)	10
3.	श्री आदिनाथ स्तुति (सप्तविभक्ति समन्वित)	11
4.	श्री ऋषभदेव स्तुति (हिन्दी)	11
5.	श्री ऋषभदेव स्तोत्र (संस्कृत छंद सहित)	13
6.	श्री ऋषभदेव स्तुति (दशावतार गर्भित)	15
7.	चतुर्विंशतिजिनस्तुति (संस्कृत)	17
8.	श्री ऋषभदेव पूजा	19
9.	जिनप्रतिमा के दर्शन का महत्त्व	25
10.	प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जीवन दर्शन	26
11.	भगवान ऋषभदेव के दश अवतार	27
12.	प्रशस्ति	30
13.	भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर के निर्माण एवं कार्यकलापों की प्रशस्ति	31
14.	राजधानी दिल्ली से सन् 2000 में प्रयाग की ओर मंगल विहार एवं उसके बाद के कार्यक्रमों में मेरी भूमिका एवं सहयोग	37
15.	भजन	39
16.	श्री ऋषभदेव की मंगल आरती	40

।।ॐ नमः सिद्धेभ्यः।।

भगवान ऋषभदेव स्तुति संग्रह एवं पूजा

मंगलाचरण

(श्री गौतमस्वामीकृत वंदना)

चउवीसाए अरहंतेसु।

अट्ठावयपव्वदे सम्मेदे उज्जंते चंपाए पावाए.....जावो अण्णाओ कावो वि णिसीहियाओ.....णमंसामि।

यावन्ति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि, वंदे भूयांसि भूतये[1]।।

तीर्थंकर अर्हंत भगवान चौबीस हैं।

अष्टापद पर्वत – कैलाशपर्वत, सम्मेदशिखर, उज्जंते-ऊर्जयंतगिरि – गिरनारपर्वत, चंपापुरी, पावापुरी ये निर्वाणभूमि – सिद्धक्षेत्र हैं। इनसे अतिरिक्त और जो भी निषीधिका स्थान – मांगीतुंगी पर्वत आदि तथा तीर्थंकर भगवन्तों की गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञानभूमि आदि भी तीर्थ हैं, इन सभी की हम वंदना करते हैं।

इस लोक – संसार में-मध्यलोक में जितनी भी अकृत्रिम और कृत्रिम जिनप्रतिमाएँ हैं, उन सभी जिनचैत्य – जिनप्रतिमाओं को हम स्वात्मसंपत्ति की प्राप्ति के लिए वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं।

1. चैत्यभक्ति।

श्री ऋषभदेव स्तुतिः

(सप्तविभक्ति सहित)

(1)

प्रभुः ऋषभदेवस्त्वं, जगत्सृष्टा जगद्गुरूः।
ऋषभदेवमानौमि, सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।1।।

हतः ऋषभदेवेन, स्वकर्मनिचयः स्वयं।
नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।।2।।

तीर्थं ऋषभदेवाद् हि, स्वर्गमोक्षविधायकं।
धर्मः ऋषभदेवस्य, साधुगृहि-द्विभेदतः।।3।।

भक्तिं ऋषभदेवेऽहं, करोमि सर्वसौख्यदाम्।
ऋषभदेव! मां रक्ष, निमज्जंतं भवाम्बुधौ।।4।।

(2)

ऋषभो युगब्रह्मा त्वं, ऋषभमाश्रयाम्यहम्।
ऋषभेण हतो मृत्युः, ऋषभाय नमो नमः।।1।।

ऋषभाज्जीवनोपायः, ऋषभस्य वृषो दया।
ऋषभे स्यात् स्थिरा भक्तिः, पाहि मां ऋषभ! प्रभो!।।2।।

(3)

ऋषभोऽयं महादेवः, ऋषभमाश्रयाम्यहम्।
ऋषभेण कृता सृष्टिः, ऋषभाय नमो नमः।।1।।

ऋषभात् सार्वतीर्थोऽभूत् ऋषभस्य वृषो दया।
ऋषभे कुरू सद्भक्तिं, ऋषभ! त्वं पुनीहि माम्।।2।।

श्री आदिनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

(4)

-अनुष्टुप् छंदः-

आदिनाथो जगत्स्वामी, प्रथमस्तीर्थकृन्मतः।
आदिनाथमहं नित्य-माश्रयामि हितेच्छया।।1।।

आदिनाथेन सृष्टिः स्यात्, षट्स्वकर्मविधायिनी।
आदिनाथाय मे नित्य-मनंतशो नमो नमः।।2।।

आदिनाथाद् जिनो धर्मः, गृहि-मुन्योर्द्विभेदतः।
आदिनाथस्य पुत्रास्ते, शतैका हि शिवंगताः।।3।।

आदिनाथे स्थिरा बुद्धिः, मे स्याद् भवान्तकारिणी।
हे आदिनाथ! मां रक्ष, भवाद् भव्यांश्च सर्वदा।।4।।

श्री ऋषभदेव स्तुति (हिन्दी)

-शंभुछंद-

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

आषाढ़ बदी दुतिया तिथि थी, मरुदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री-ह्री-धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैत्रवदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्मे।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।

वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।

प्रभु ने असि मसि आदिक किरिया, उपदेशी आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक-मुनिमार्ग विधाता थे।।3।।

थे कनक वर्ण धनु पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षणधारी थे।।
दीक्षा से तीर्थ प्रयाग बना, जहाँ नग्न दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोंच करा।।4।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।

षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहारदान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैसाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।

अक्षयवटवृक्ष तले तिष्ठे, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।
त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु के गले मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भव से सु निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे पुरुदेव! मुझे, शुभ ''ज्ञानमती'' श्री देवें झट।।8।।

श्री ऋषभदेव स्तोत्र

श्रीछन्दः—(1 अक्षरी)

ॐ, मां। सोऽ-व्यात्।।1।।

स्त्रीछन्दः—(2 अक्षरी)

जैनी, वाणी। सिद्धिं, दद्यात्।।2।।

केसाछन्दः—(3 अक्षरी)

गणीन्द्र!, त्वदंघ्रिं। नमामि, त्रिकालं।।3।।

मृगीछन्दः—(3 अक्षरी)

श्री-जिनैः, संततं। मे मनः, पूयताम्।।4।।

नारीछन्दः—(3 अक्षरी)

श्री-देवो, नाभेयः। वंदेऽहं, तं मूर्ध्ना।।5।।

कन्याछन्दः—(4 अक्षरी)

पूः साकेता, पूता जाता। त्वत्सूतेः सा, सेंद्रैर्मान्या।।6।।

व्रीडाछन्दः—(4 अक्षरी)

महासत्यां, मरुदेव्यां। सुतोऽभूस्त्वं, जगत्पूज्यः।।7।।

लासिनीछन्दः—(4 अक्षरी)

युगादिजो, जिनेश्वरः। ददातु मे, शिवश्रियं।।8।।

सुमुखीछन्दः—(4 अक्षरी)

नाभिनृपः, तेऽस्ति पिता। आदिजिनः, पातु मम।।9।।

सुमतिछन्दः—(4 अक्षरी)

सुखकारी, भवहारी। पुरुदेवो, वस मेऽन्तः।।10।।

समृद्धिछन्दः—(4 अक्षरी)

ज्ञानसिंधुं, सर्वबंधुं। सर्व सिद्ध्यै, नौमि नित्यं।।11।।

पंक्तिछन्दः—(5 अक्षरी)

हाटकवर्णं, सद्गुण-पूर्णम्।

सिद्धिवधूस्त्वां, सा स्म वृणीते।।12।।

शशिवदनाछन्दः—(6 अक्षरी)

मुनिनुतपादः, त्रिभुवननाथः।
विगलितमोहः, निजसुखमाप्नोत्।।13।।

मदलेखाछंदः—(7 अक्षरी)

देवेन्द्रैः परिपूज्यो, योगीन्द्रैरनुचिन्त्यः।
चक्रेशैरभिवंद्यो, वंदे तं वृषभेशम्।।14।।

अनुष्टुप्छन्दः—(8 अक्षरी)

आषाढेऽसितपक्षे स्याद्, द्वितीया तिथिरुत्तमा।
सर्वार्थसिद्धितश्च्युत्वा, मातुर्गर्भे समागतः।।15।।

नवम्यां चैत्रकृष्णे त्वं, जन्म प्राप्य प्रजापतिः।
ब्रह्मा सृष्टा विधाताभूद्, युगादौ तीर्थनायकः।।16।।

चैत्रकृष्णे नवम्यां हि, स्वयंभूर्दीक्षितोऽभवत्।
फाल्गुनेऽसितपक्षेऽभू-देकादश्यां सुकेवली।।17।।

माघकृष्णे चतुर्दश्यां, कैलाशे गिरिमस्तके।
निर्वृतिं परमां लब्ध्वा, सिद्धिकांतापति-र्बभौ।।18।।

आयुश्चतुरशीत्यामा, लक्षपूर्व-प्रमाणकः।
इक्ष्वाकुवंशभास्वान् यो, पुरुदेवो पुनातु मे।।19।।

द्विसहस्रकरोत्तुंगो, वृषभो वृषलाञ्छनः।
जीयात् त्रैलोक्यनाथोऽसौ, स्याद्वादामृतशासनः।।20।।

शार्दूलविक्रीडितछन्दः—(19 अक्षरी)

यः क्रोधादिरिपून् विजित्य सहसा, स्वात्मोत्थ-सौख्यामृतं।
पायं पायमहर्निशं भवभयात्, स्वात्मानमुद्धृत्य वै।।
त्रैलोक्याग्रपदे धृतश्च, निवसत्यद्याप्यनंतावधि।
दिश्यात् श्रीऋषभो स एष भगवान्, मे ज्ञानमत्यै श्रियं।।21।।

श्री ऋषभदेव स्तुतिः

(दशावतारगर्भित)

-अनुष्टुप् छंद-

ऋषभेशं नमस्कृत्य, तस्यानंतगुणेष्वपि।
स्वल्पगुणान् समादाय, भक्त्या मोदात् स्तवीम्यहम्।।1।।

महाबलं नुमो नित्य-मतुल्यबलधारिणम्।
जन्मातिशयसंयुक्त-मादिनाथं शिवाप्तये।।2।।

अतीव सुंदरं रूपं, धारयन् वृषभेश्वरः।
ललितांगो जयत्वत्र, स्वात्मसौंदर्यवानपि।।3।।

वज्रवत्स्थिरजंघाय, श्रेष्ठसंहननाय ते।
नमोऽस्तु वज्रजंघाय, ऋषभाय स्वशक्तये।।4।।

अर्यते गुणवद्भिर्यो-ऽसावार्यः ऋषभो जिनः।
पूज्यस्तस्मै नमो नित्यं, नानर्द्धिगुणप्राप्तये।।5।।

अन्तर्लक्ष्मीधरोऽनन्त-गुणी बाह्यविभूतिमान्।
समवादिसृतेर्भर्ता, श्रीधराय नमोऽस्तु ते।।6।।

तीर्थकृत्प्रकृतिः सुष्ठु, तां बद्ध्वा तीर्थनायकः।
युगादावादिब्रह्मा यस्तस्मै सुविधये नमः।।7।।

अच्युतो मरणातीतो, न च्युतो नहि जायते।
तस्येन्द्रो हि 'जिनेन्द्रः' स्यात्, तस्मै नित्यं नमोऽस्तु मे।।8।।

समचतुष्कसंस्थानं, दधानो वज्रनाभिभाक्।
तस्मै नमोऽस्तु मे नित्यं, वज्रनाभिजिनेशिने।।9।।

संपूर्णार्थस्य संसिद्धि-र्जाता यस्य जिनेशिनः।
सर्वार्थसिद्धिजं देवं, तं स्तुमः स्वार्थसिद्धये।।10।।

पंचकल्याणकं वंदे, तीर्थेशां सर्वसौख्यदम्।
केवलमेककल्याणं, याचेऽहं देव! देहि मे।।11।।

गर्भवासमहद्दुःखाद्, भीत्याहं तद्विमुक्तये।
गर्भकल्याणकं स्तौमि, तीर्थेशामपुनर्भुवाम्।।12।।

तीर्थकर्तृजिनेन्द्राणां, जन्मकल्याणकं नुवे।
पुनर्जन्म न मे भूयात्, याञ्चा एकैव त्वत्प्रभोः।।13।।

विश्वस्रष्ट्रे जगद्भर्त्रे, ऋषभाय नमो नमः।
सर्वा विद्याकला यस्मा-दाविर्भूता महीतले।। 14।।

नमामि पुरुदेवस्य, दीक्षाकल्याणकं मुदा।
यतो दीक्षाफलं लप्स्ये, शीघ्रं भक्तिप्रसादतः।।15।।

युगादौ मुनिचर्यां यः, चांद्रीचर्यां प्रदर्शयन्।
प्रथमाहारलाभं सः, समाप्नोत् हस्तिनापुरे।।16।।

तं ऋषभेश्वरं नौमि, तृतीयामक्षयामपि।
हस्तिनागपुरं तीर्थं, स्तवीमि भक्तितोऽधुना।।17।।

केवलज्ञानकल्याणं, प्राप्नोत् यो घातिकर्मभित्।
केवलज्ञानप्राप्त्यर्थं, केवलं ते नमो नमः।।18।।

प्रभोः ऋषभदेवस्य, दिव्यध्वनिं नमाम्यहम्।
यत्प्रसादेन सोऽद्यापि, मोक्षमार्गः प्रवर्तते।।19।।

सर्वकर्मविनिर्मुक्तः प्राप्नोत् सिद्धालयं प्रभुः।
तल्लोकाग्र्यगमनार्थं, तस्मै मेऽनन्तशो नमः।।20।।

युगादौ दर्शिता मोक्ष-मार्गस्य या परंपरा।
साद्यावध्यपि लोकेऽस्मिन्, वर्तते तां श्रयाम्यहम्।।21।।

भरतं चक्रिणं नौमि, स्वात्मानं भावयन्नसौ।
दीक्षामादाय कैवल्यं, क्षणे लेभे जिनोऽभवत्।।22।।

श्रीवृषभादिवीरान्ता-श्चतुर्विंशतयो जिनाः।
सर्वसौख्यप्रदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

शासनाधिपतिं देवं, महावीरं नमाम्यहम्।
अहिंसा शासनं यस्य, सार्वमद्यापि वर्तते।।24।।

प्रथमं तीर्थकर्तारं, वंदे भक्त्याप्यनन्तशः।
युष्मद् भक्तिः सदा मह्यं, दद्यात् ''ज्ञानमतीं'' श्रियम्।।25।।

चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः

–अनुष्टुप् छंद–

पुरुदेव! नमस्तुभ्यं, युगादिपुरुषाय ते।
इक्ष्वाकुवंशसूर्याय, वृषभाय नमो नमः।।1।।

नमस्तेऽजितनाथाय, कर्मशत्रुजयाय ते।
अजयेशक्ति-लाभार्थ-मजिताय नमो नमः।।2।।

भवसंभवदुःखार्त्ति-नाशिने परमेष्ठिने।
नमो संभवनाथाया-नंत विभवलब्धये।।3।।

गुणसमृद्धियुक्ताय, जिनचंद्राय ते नमः।
अभिनंदनदेवाय, नमः स्वगुणवृद्धये।।4।।

ध्वस्तकुमतिदेवाय, जन्ममृत्युप्रमाथिने।
नमो सुमतिनाथाय, सुष्ठुमतिप्रदायिने।।5।।

मुक्तिपद्मासुकांताय, पद्मवर्ण! नमोस्तु ते।
पद्मप्रभजिनेशाय, निजलक्ष्म्यै नमो नमः।।6।।

भवपाशच्छिदे तुभ्यं, श्रीसुपार्श्व! नमो नमः।
संसृतिपार्श्वदूराय, मुक्तिपार्श्वविधायिने।।7।।

वागमृतकरैर्भव्य-पोषिणे जिनचंद्र! ते।
नमो नमोऽस्तु चन्द्राय, सर्वसंतापहानये।।8।।

पुष्पदंतजिनेन्द्राय, पुष्पवाणच्छिदे नमः।
तुष्टिपुष्टिप्रदातस्ते, स्वात्मपुष्ट्यै नमो नमः।।9।।

शीतलेश! नमस्तुभ्यं, वचस्ते सर्वतापहृत्।
श्रीमत्शीतलनाथाय, शीतीभूताय देहिनाम्।।10।।

श्रेयस्करो जगत्यस्मिन्, श्री श्रेयन्! ते नमो नमः।
अन्वर्थनामधृत् देव! श्रेयो मे कुरुतात् सदा।।11।।

वासुपूज्यो जगत्पूज्यः, पूज्यपूजातिदूरगः।
पूज्यो जनः प्रसादात्ते, भवेत्तुभ्यं नमो नमः।।12।।

कर्ममलविनिर्मुक्तो, विमलाय नमो नमः।
तव नामस्मृतिर्लोकं, नैर्मल्यं कुरुते क्षणात्।।13।।

अनंतनाथ! दृग्ज्ञान-वीर्यसौख्यैरनन्तगः।
अनंतसौख्यलाभाय, भक्त्या तुभ्यं नमो नमः।।14।।

नमोऽस्तु धर्मनाथाय, धर्मतीर्थंकराय ते।
धर्मचक्रेश! मे नित्यं, धर्म्यध्यानं विधीयताम्।।15।।

स्वकर्मक्षयतः शांतिं, लब्ध्वा शांतिकरोऽभवत्।
शांतिनाथ! नमस्तुभ्यं, मनःक्लेशप्रशांतये।।16।।

अहिंसां कुंथुजीवेषु, कृत्वा कुंथुजिनोऽभवत्।
रक्षां विधेहि मे नित्यं, कुंथुनाथ! नमोऽस्तु ते।।17।।

जगत्त्रयविभुर्सूर्यो, मोहान्धकारहृज्जिनः।
हंताप्यरेर्नमस्तुभ्य-मरनाथ! नमो नमः।।18।।

कर्ममल्लभिदे तुभ्यं, मल्लिनाथ! नमो नमः।
स्वमोहमल्लनाशाय, भववल्लिभिदे नमः।।19।।

महाव्रतधरो धीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
नमस्तुभ्यं तनुतान्मे, रत्नत्रयस्य पूर्णताम्।।20।।

सर्वसंगविरक्तः सन्, मुक्तिश्रीरक्तमानसः।
नमिनाथ! नमस्तुभ्यं, मह्यं मुक्तिश्रियं दिश।।21।।

राजीमतीं परित्यज्य, महादयार्द्रमानसः।
लेभे सिद्धिवधूं सिद्ध्यै, नेमिनाथ! नमोऽस्तु ते।।22।।

सर्वंसहो जिनः पार्श्वो, दैत्यारिमदमर्दकः।
सहिष्णुतां प्रपुष्यान्मे, नित्यं तुभ्यं नमो नमः।।23।।

वर्धमानो महावीरो-ऽतिवीरो सन्मतिर्जिनः।
वीरनाथो नमस्तुभ्यं, सन्मतिं वितनोतु मे।।24।।

चतुर्विंशतितीर्थेशान्, त्रिसंध्यं स्तौति यो नरः।
प्राप्नोति स त्वरं लक्ष्मीं, ज्ञानमत्या समन्विताम्।।25।।

श्री ऋषभदेव पूजा

–अथ स्थापना –

तर्ज–ऐ माँ तेरी सूरत से अलग...

जिनवर की शरण में आये हैं, तन-मन-धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिये, जीवन भी समर्पण कर देंगे।।टेक.।।

शुभ नगरि अयोध्या की, धनपति ने रचना की।
माता के आँगन में, रत्नों की वर्षा की।।
आदीश्वर तीर्थंकर प्रभु का, शिर नत कर वंदन कर लेंगे।।भगवान.।।

श्री ऋषभदेव का हम, आह्वानन करते हैं।
निज हृदय कमल में प्रभु, स्थापन करते हैं।।
हम सन्निधिकरण विधी करके, प्रभुपद का अर्चन कर लेंगे।।भगवान.।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–शंभु छंद –

ऋषभेश सुयश सम उज्ज्वल जल, लेकर झारी भर लाये हैं।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश गुणों सम अतिशीतल, चंदन घिस कर ले आये हैं।
निज की शीतलता पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।

श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश सौख्य सम खण्ड रहित, उज्ज्वल तंदुल ले आये हैं।
निज सुख अखण्ड पाने हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश गुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाये हैं।
निज गुण सुगंधि पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश पुष्टि सम नानाविध, पकवान बनाकर लाये हैं।
निज आत्मतृप्ति पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाये हैं।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतू, हम आरति करने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश गुणों की सुरभि सदृश, वर धूप सुगंधित लाये हैं।
निज आत्मसुरभि पाने हेतू, अग्नी में धूप जलाये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश सुखामृत सदृश मधुर, रस भरे बहुत फल लाये हैं।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवन्! फल आज चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभेश गुणों के सम अनर्घ्य, यह अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' हेतू ही, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद–

सरयू नदी का जल भरें, हम स्वर्णभृंग में।
त्रयधार दे धारा करें, प्रभु पादकमल में।।
तिहुँलोक में सुख शांति हो, यह भावना करें।
हो मन पवित्र मेरा, यह याचना करें।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला वकुल गुलाब, सुरभि पुष्प चुन लिये।
प्रभु पाद पंकेरुह में, कुसुम अंजली किये।।

धन धान्य सौख्य संपदा, स्वयमेव आ मिले।
भक्ती से शक्ति हो प्रगट, शिवयुक्ति भी मिले।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद –

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्नवृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी दुतिया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु-मात सेव।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री-ह्री-धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।

इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

चिन्मय चिन्तामणि प्रभो! ऋषभदेव भगवान।
पूर्ण अर्घ्य लेकर जजूँ, मिले सिद्ध स्थान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय नमः।** (9 बार जाप्य या 108 बार)

जयमाला

–दोहा –

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम ध्वनि सुन भविवृंद नित, हरें सकल संताप।।1।।

–शंभु छंद –

जय ऋषभदेव जिन का वैभव, अंतर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्शज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय गुणमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
गुरु गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, छ्यानवे मील की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभें।।4।।

अंधे पंगू रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महा वीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

जिनवर से बारह गुणे तुंग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर, लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये दूर-दूर तक गाँवों में, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जलपूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अतिसुंदर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।8।।

हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।

तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम वच तुम गुण गावें।।9।।

–दोहा –

नाथ! आप गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।

जिनप्रतिमा के दर्शन का महत्त्व

फलं ध्यानाच्चतुर्थस्य षष्ठस्योद्यानमात्रतः।
अष्टमस्य तदारम्भे गमने दशमस्य तु।।178।।
द्वादशस्य ततः किंचिन्मध्ये पक्षोपवासजम्।
फलं मासोपवासस्य लभते चैत्यदर्शनात्।।179।।
चैत्याङ्गणं समासाद्य याति षाण्मासिकं फलम्।
फलं वर्षोपवासस्य प्रविश्य द्वारमश्नुते।।180।।
फलं प्रदक्षिणीकृत्य भुङ्क्ते वर्षशतस्य तु।
दुष्ट्वा जिनास्यमाप्नोति फलं वर्षसहस्रजम्।।181।।
अनन्तफलमाप्नोति स्तुतिं कुर्वन् स्वभावतः।
नहि भक्तेर्जिनेन्द्राणां विद्यते परमुत्तमम्।।182।।[1]

जो मनुष्य जिनप्रतिमा के दर्शन का चिन्तवन करता है वह वेला का, जो उद्यम का अभिलाषी होता है वह तेला का, जो जाने का आरंभ करता है वह चौला का, जो जाने लगता है वह पाँच उपवास का, जो कुछ दूर पहुँच जाता है, वह बारह उपवास का, जो बीच में पहुँच जाता है वह पन्द्रह उपवास का, जो मंदिर के दर्शन करता है वह मासोपवास का, जो मंदिर के आंगन में प्रवेश करता है वह छह माह के उपवास का, जो द्वार में प्रवेश करता है वह वर्षोपवास का, जो प्रदक्षिणा देता है वह सौ वर्ष के उपवास का, जो जिनेन्द्र देव के मुख का दर्शन करता है वह हजार वर्ष के उपवास का और जो स्वभाव से स्तुति करता है वह अनन्त उपवास के फल को प्राप्त करता है। यथार्थ में जिनभक्ति से बढ़कर उत्तम पुण्य नहीं है।।178-182।।

1. पद्मपुराण भाग-2, सर्ग 32, श्लोक नं.-178-182, पृ. 98।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जीवन दर्शन

जन्मभूमि -अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

पिता -महाराज नाभिराय **माता** -महारानी मरुदेवी

वर्ण -क्षत्रिय **वंश** -इक्ष्वाकु

देहवर्ण -तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह** -बैल

आयु -चौरासी लाख पूर्व वर्ष **अवगाहना**-दो हजार हाथ

गर्भ -आषाढ़ कृ.2 **जन्म** -चैत्र कृ.9

तप -चैत्र कृ.9

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष-प्रयाग-सिद्धार्थवन, वट वृक्ष (अक्षयवट)

प्रथम आहार -हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस द्वारा (इक्षुरस)

केवलज्ञान -फाल्गुन कृ.11 **मोक्ष** -माघ कृ.14

मोक्षस्थल -कैलाश पर्वत

समवसरण में गणधर -श्री वृषभसेन आदि 84

मुनि -चौरासी हजार **गणिनी** -आर्यिका ब्राह्मी माता

आर्यिका -तीन लाख पचास हजार **श्रावक** -तीन लाख

श्राविका -पांच लाख **जिनशासन यक्ष** -गोमुख देव

यक्षी -चक्रेश्वरी देवी

भगवान ऋषभदेव वर्तमान वीर नि.सं.2546 से 39506 वर्ष कम, सौ लाख करोड़ सागर अर्थात् एक कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष पहले मोक्ष गए हैं। इससे चौरासी लाख पूर्व वर्ष पहले जन्में हैं।

तीर्थंकर ऋषभदेव के दश अवतार

-मंगलाचरण-

त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरुपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः स्वोत्थानंतचतुष्टयः।।1।।
त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः।।2।।
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर![1]।।3।।

हे भगवन्! आप जगत् को प्रकाशित करने वाले जगज्योतिस्वरूप एक हैं, ज्ञान तथा दर्शनरूप द्विविध उपयोग के धारक होने से दो रूप हैं, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप त्रिविध मोक्षमार्गमय होने से तीन रूप हैं। अपने आप में उत्पन्न हुए अनन्त चतुष्टयरूप होने से चार रूप हैं। पंच परमेष्ठीरूप होने से अथवा गर्भादि पंचकल्याणकों के नायक होने से पाँच रूप हैं। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन छह द्रव्यों के ज्ञाता होने से छह रूप हैं। नैगम आदि सात नयों के संग्रहस्वरूप होने से सात रूप हैं। सम्यक्त्व आदि आठ अलौकिक गुणरूप होने से आठ रूप हैं। नौ केवललब्धियों से सहित होने से नव रूप हैं और महाबल आदि दश अवतारों से आप का निर्धारण होता है इसलिए आप दश रूप हैं। इस प्रकार हे परमेश्वर! संसार के दुःखों से आप मेरी रक्षा कीजिए।

इन दश अवतारों का कथन करते हुए श्रीमज्जिनसेनाचार्य ने महापुराण में भगवान् की अग्रलिखित पद्यों से सौधर्मेंद्र के द्वारा स्तुति करायी है–

महाबल! नमस्तुभ्यं ललितांगाय ते नमः।
श्रीमते वज्रजंघाय धर्मतीर्थप्रवर्तिने।।1।।
नमः स्तादार्य ते शुद्धि-श्रिते श्रीधर! ते नमः।
नमः सुविधये तुभ्य-मच्युतेन्द्र! नमोऽस्तु ते।।2।।

---

1. आदिपुराण, पर्व 25, श्लोक 221-222-223।

वज्रस्तंभस्थिरांगाय, नमस्ते वज्रनाभये।
सर्वार्थसिद्धिनाथाय, सर्वार्थां सिद्धिमीयुषे।।3।।
दशावतारचरम - परमौदारिकत्विषे।
सूनवे नाभिराजस्य, नमोऽस्तु परमेष्ठिने[1]।।4।।

हे नाथ! आप इस भव से दशवें भव में महाबल नाम के विद्याधर राजा थे, यह आपका 'महाबल' नाम का प्रथम अवतार हुआ क्योंकि उसी भव से आपने उत्थान प्रारंभ किया था अथवा आप महान् बल–अतुल्यबल के धारक हैं इसलिए आपको नमस्कार हो। आप नवमें भव पूर्व 'ललितांग' नाम के देव थे अथवा आप अतिशय सुन्दर–ललित अंग के धारक हैं इसलिए आपको नमस्कार हो। आठवें भव पूर्व आप वज्रजंघ राजा थे अथवा आप वज्र के समान मजबूत जंघाओं को धारण करने वाले एवं अंतरंग-बहिरंग लक्ष्मी से सहित, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक हैं, अतः आपको नमस्कार हो।

आप सातवें भव पूर्व भोगभूमिज आर्य थे अथवा आप 'आर्य'–पूज्य हैं इसलिए आपको नमस्कार हो। आप छठे भव पूर्व श्रीधर नाम के देव थे अथवा दिव्य उत्तम शोभा को धारण करने वाले होने से आपका 'श्रीधर' नाम सार्थक है, ऐसे आपको नमस्कार हो। आप पाँचवें भव पूर्व 'सुविधि' राजा थे अथवा आप सुविधि–उत्तम भाग्यशाली हैं अतः आपको नमस्कार हो। आप चौथे भव पूर्व अच्युत नाम के सोलहवें स्वर्ग के इंद्र थे अथवा 'अच्युतेन्द्र' अर्थात् अविनाशी स्वामी हैं अतः आपको नमस्कार हो। आप तीसरे भव में वज्रनाभि चक्रवर्ती थे अथवा आप वर्तमान में वज्र के समान मजबूत नाभि को धारण करने वाले हैं अतः आप 'वज्रनाभि' भगवान् को नमस्कार हो। आप इस भव से दूसरे भव पूर्व सर्वार्थसिद्धि नाम के विमान के स्वामी थे अथवा आज आप सम्पूर्ण अर्थ–मनोरथों की या सर्वप्रयोजनों की सिद्धि को प्राप्त हैं इसलिए 'सर्वार्थसिद्धिनाथ' आप को नमस्कार हो। हे नाथ! आप 'दशावतारचरम' हैं अर्थात् आप सांसारिक पर्यायों में अंतिम अथवा ऊपर कहे हुए महाबल आदि दश अवतारों में अंतिम परमौदारिक शरीर को धारण

1. आदिपुराण, पर्व 14, श्लोक 48 से 51।

करने वाले महाराजा नाभिराज के पुत्र प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव परमेष्ठी हुए हैं इसलिए आपको नमस्कार हो।

इन दशावतारों में क्रम से-1. महाबल 2. ललितांग देव 3. राजा वज्रजंघ 4. भोगभूमिज आर्य 5. श्रीधरदेव 6. राजा सुविधि 7. अच्युतेन्द्र 8. चक्रवर्ती वज्रनाभि 9. सर्वार्थसिद्धि के अहमिंद्र 10. भगवान ऋषभदेव, इन भवों को समझना चाहिए।

सौधर्मेन्द्र ने भगवान ऋषभदेव का जन्मोत्सव सुमेरु पर्वत पर करने के बाद अयोध्या में आकर जब बालक को माता-पिता को सौंप दिया था, उसके बाद वहीं पर 'आनन्द' नाम से बहुत ही सुन्दर नाटक किया उसी के अंतर्गत ताण्डव नृत्य किया था, उसी समय इंद्र ने भगवान के दशावतार सम्बंधी नाटक भी किया था।[1]

भगवान ऋषभदेव के यशस्वती और सुनंदा दो रानियाँ थीं। यशस्वती महारानी से भरत, ऋषभसेन आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी पुत्री का जन्म हुआ। सुनंदा महारानी से बाहुबली पुत्र और सुन्दरी पुत्री का जन्म हुआ। ऐसे प्रभु ऋषभदेव के 101 पुत्र व दो पुत्रियाँ थीं। ब्राह्मी पुत्री को अ, आ आदि लिपि एवं सुंदरी को 1, 2 आदि अंक विद्या से प्रारंभ करके भगवान ने अपने सभी पुत्रों एवं दोनों पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं एवं कलाओं में निष्णात किया था।

प्रजा को असि, मषि, कृषि, शिल्प, विद्या एवं वाणिज्य षट्क्रियाओं का उपदेश दिया। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ऐसे तीन वर्णों की व्यवस्था बनाई एवं मंडलीक, महामण्डलीक आदि राजा बनकर उन्हें राजनीति का उपदेश दिया था। अनंतर प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा लेकर एक वर्ष उनतालिस दिन बाद हस्तिनापुर में प्रथम इक्षुरस का आहार प्राप्त किया था। पुनः एक हजार वर्ष बाद प्रयाग में केवलज्ञान प्राप्तकर दिव्य उपदेश दिया। भगवान के समवसरण में पुत्र ऋषभसेन प्रथम गणधर व भरत चक्रवर्ती मुख्य श्रोता थे। भगवान ने अंत में कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया है।

तीर्थंकर भगवान जन्म से ही भगवान कहे गये हैं। यह बात ध्यान में रखना है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को कोटि-कोटि नमस्कार होवे।

---

1. तदा प्रयुक्तमन्यच्च रूपकं बहुरूपकं। दशावतार संदर्भमधिकृत्य जिनेशिनः।।104।। (आदिपुराण, पर्व 14।)

प्रशस्ति

-दोहा-

शांतिनाथ तीर्थेश को, नमूँ अनन्तों बार।
कुंथुनाथ अरनाथ को, नमूँ भक्ति उरधार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वती मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमती नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्दपच्चीस सौ, छ्यालिस ज्येष्ठ सुमास।
सित दशमी चौबीसवाँ, प्रतिष्ठापनादिन आज।।5।।

भारत की राजधानी में, दिल्ली शहर प्रधान।
प्रीतविहार कालोनी में, कमल जिनालय मान्य।।6।।

ऋषभदेव प्रतिमा यहाँ, अतिशय महिमापूर्ण।
आर्ष प्रसिद्ध परम्परा, करे कामना पूर्ण।।7।।

अनिलकुमार प्रसिद्ध ये, श्रावकगुण सम्पन्न।
जिनमंदिर निर्माणकर, किया जन्म को धन्य।।8।।

पत्नी, पुत्र व पुत्रियाँ, सभी धर्म में श्रेष्ठ।
यह परिवार सदा रहे, सुख संपत्ति में ज्येष्ठ।।9।।

परम अहिंसा धर्म यह, जब तक जग में मान्य।
कमल जिनालय ऋषभ प्रभु, करें जगत कल्याण।।10।।

ऋषभदेव गुणगान कर, करें मनोरथ सिद्ध।
''ऋषभदेव स्तुति'' पुस्तिका, तब तक दे सुख सिद्धि।।11।।

भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर के निर्माण एवं कार्यकलापों की प्रशस्ति

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक तीर्थंकर परम्परा में प्रतिपादित जैन आगम में मध्यलोक के अन्दर असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं, इसमें सर्वप्रथम द्वीप का नाम 'जम्बूद्वीप' है। इस जम्बूद्वीप के 190वें भाग में भरत क्षेत्र है। इस क्षेत्र में 6 खण्ड के अन्तर्गत आर्यखण्ड में भारत की राजधानी दिल्ली में प्रीतविहार कॉलोनी है। यहाँ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से मैंने अपने मकान के प्रांगण में भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर का निर्माण किया है, जिसका संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है-

27 नवम्बर सन् 1995 को दिगम्बर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, हस्तिनापुर में निर्मित जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी अपने संघ सहित मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (महाराष्ट्र) की यात्रा हेतु हस्तिनापुर से मंगल विहार कर 10 दिसम्बर 1995 को प्रीतविहार पधारीं, तब मैंने पूज्य माताजी के समक्ष अपने मकान में एक चैत्यालय की स्थापना हेतु भावना व्यक्त की। मेरी भावनानुसार उन्होंने मकान परिसर के यथायोग्य स्थान पर 11 दिसम्बर को प्रातः अपने करकमलों से भूमि में मंत्रोच्चारणपूर्वक एक रक्षायंत्र स्थापित किया, जैसे वटवृक्ष के लिए बीज डाला हो।

इसे गुरुकृपा कहूँ या यंत्र का चमत्कार ? इसके पश्चात् संघ का तो दिल्ली से विहार हो गया और मैंने पूज्य माताजी के आदेशानुसार एक कुशल कारीगर से इस लघुकाय कमल मंदिर का निर्माण प्रारंभ कराया, जो देखते ही देखते एक भव्य जिनालय के रूप में परिणत हो गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-

पूज्य माताजी मांगीतुंगी से विशाल महामहोत्सव कराने के पश्चात् अनेक प्रदेशों में व्यापक धर्मप्रभावना के बाद जब पुनः 30 मार्च 1997 को दिल्ली पधारीं, तब मेरे निवेदन पर वीर निर्वाण संवत् 2523, ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया से दशमी, दिनाँक 8 जून 1997 से 15 जून 1997 तक अपने ससंघ सान्निध्य

में इस कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को अत्यन्त धर्मप्रभावनापूर्वक सम्पन्न कराया।

इस प्रतिष्ठा समारोह में मुझे एवं मेरी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता को सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे जीवन काल की प्रथम वृहद् पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होने के कारण मुझे अपार प्रसन्नता थी। अतः मैंने स्वरुचि से अपने संबंधीजनों तथा प्रीतविहार दिगम्बर जैन समाज के विशिष्ट महानुभावों को बिना किसी न्यौछावर राशि के इस महोत्सव में अन्य इन्द्र आदि पदों पर प्रतिष्ठित करने हेतु आमंत्रित किया। जिसे सभी ने सहृदयता से स्वीकार कर मुझे असीम स्नेह प्रदान किया। प्रतिष्ठा के समापन अवसर पर जैन समाज प्रीतविहार ने मुझे 'धर्मपुत्र' की उपाधि से अलंकृत कर रजत प्रशस्ति द्वारा मेरा सम्मान किया।

मंदिर पर कलशारोहण-

पूज्य माताजी ने 2 अप्रैल 1997, चैत्र कृष्णा नवमी से 22 मार्च 1998, चैत्र कृष्णा नवमी तक भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव वर्ष घोषित किया था। उस महोत्सव समिति में मुझे केन्द्रीय उपाध्यक्ष के पद पर मनोनीत कर यथायोग्य कार्य करने का अवसर दिया। कमल मंदिर की प्रतिष्ठा भी जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के अवसर पर ही सम्पन्न करने का सुयोग प्राप्त हुआ। इस वर्ष के अन्तर्गत केन्द्रीय समिति की घोषणा कर राजधानी दिल्ली में अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया तथा अक्टूबर 1997 में रिंग रोड पर आयोजित चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान ने तो दिल्ली को एक धार्मिक नगरी बना दिया। इसके साथ ही समस्त प्रान्तों में भी महोत्सव वर्ष के अन्दर अनेकानेक धार्मिक एवं शैक्षणिक आयोजन सम्पन्न हुए।

चैत्र कृष्णा नवमी, दिनाँक 22 मार्च 1998, भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के समापन अवसर पर दिल्ली के लाल किला मैदान से पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का प्रवर्तन किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने उसे भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित किया। उसमें मुझे धनकुबेर बनने का अवसर प्राप्त हुआ। इस समवसरण का मंगल पदार्पण अक्षय तृतीया, दिनाँक 29 अप्रैल 1998 को प्रीतविहार में हुआ। इसी शुभ अवसर पर पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में 24 अप्रैल से 30 अप्रैल 1998 तक भगवान महावीर की लघु

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का सुयोग प्राप्त हुआ और 30 अप्रैल 1998, वैशाख शुक्ला नवमी को कमल मंदिर में उनके ससंघ सान्निध्य में स्वर्ण कलशारोहण सम्पन्न हुआ।

कमल मंदिर की द्वितीय प्रतिष्ठापना लघु पंचकल्याणक सहित सम्पन्न-

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी पिछले कई वर्षों से जैनधर्म की प्राचीनता एवं उसकी सार्वभौम सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु अत्यधिक प्रयत्नशील रही हैं। इसीलिए अक्टूबर 1998 में हस्तिनापुर में ''भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'' करवाया। जिसमें देश के 25 विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं शताधिक प्रोफेसर विद्वान पधारे और पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म की स्थापना भगवान महावीर से हुई, उक्त पाठ को संशोधित कराने का प्रस्ताव पारित किया। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के जयंती आदि महोत्सवों को आधारशिला बनाकर देशभर के समाजों को उन्हें मनाने की प्रेरणा प्रदान की।

प्रेरणा की श्रृंखला में उन्होंने भगवान ऋषभदेव का अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव मनाने का आह्वान किया। इस निमित्त से वे पुनः 13 मई 1999 को कमल मंदिर, प्रीतविहार, दिल्ली में पधारीं और 23 मई को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के आमंत्रण पर सारे देश से दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ प्रतिनिधि एकत्र हुए। उस बैठक में पूज्य माताजी की भावनानुसार भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव समिति का पूर्णरूपेण गठन होकर 4 फरवरी 2000 से 4 फरवरी 2001 तक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्वाण महोत्सव मनाने की अनेक रूपरेखाएं बनाई गई। इस निर्वाण महोत्सव समिति ने भी मुझे केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं दिल्ली प्रदेश मंत्री के रूप में यथाशक्ति कार्य करने का सौभाग्य प्रदान किया। ऋषभदेव कमल मंदिर के द्वितीय प्रतिष्ठापना के दिवस के उपलक्ष्य में 18 जून से 23 जून 1999 तक भगवान आदिनाथ एवं भगवान पार्श्वनाथ की छोटी प्रतिमा की लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई।

अनेक ऐतिहासिक निर्णय यहाँ लिए गए-

इस मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव के विषय में पूज्य माताजी प्रारंभ से ही कहती थीं कि यह एक अतिशयकारी प्रतिमा हैं। उपर्युक्त ऐतिहासिक निर्णय के पश्चात् इसी मंदिर परिसर के हाल में बैठकर लालकिला मैदान से

4 फरवरी 2000 को कैलाश पर्वत बनाने एवं उस पर तीन चौबीसी तीर्थंकरों की 72 रत्न प्रतिमाओं को विराजमान कर उनके समक्ष महामस्तकाभिषेक की रूपरेखा तथा 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाने का पूरा प्रारूप निर्णीत हुआ। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी एवं वित्त राज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन ने लालकिला मैदान में पधारकर कैलाशपर्वत के समक्ष प्रथम निर्वाणलाडू चढ़ाकर निर्वाण महोत्सव एवं ऋषभदेव मेले का उद्घाटन किया। पुनः हजारों श्रद्धालुओं ने 1008 से अधिक निर्वाणलाडू चढ़ाये। यह कार्यक्रम पंचकल्याणक महोत्सव एवं मेले के साथ 10 फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में मुझे कुबेर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माताजी का सन् 1999 का चातुर्मास दिल्ली के कनाटप्लेस क्षेत्र के राजाबाजार अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ।

इस निर्वाण महोत्सव को जहाँ देश भर के नर-नारियों ने मनाया, वहीं विदेश में भी टोरंटो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि स्थानों पर भी लोगों ने निर्वाणलाडू चढ़ाये पुनः निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत जगह-जगह ऋषभदेव जयंती, अक्षय तृतीया पर्व, व्याख्यानमाला, संगोष्ठी प्रतियोगिता एवं ऋषभदेव विधान आदि कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

वर्षायोग का स्वर्णिम अवसर-

मैं इसे भगवान ऋषभदेव प्रतिमा का साक्षात् चमत्कार ही मानता हूँ कि इस कमलमंदिर में इनके विराजमान होने के बाद यहाँ निरन्तर 2 वर्ष पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं सम्पन्न हुईं। पुनः मेरे नम्र निवेदन पर समस्त निर्माण एवं कार्यक्रम की सम्प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने संघ सहित इस मंदिर परिसर में 15 जुलाई सन् 2000 को मंगल वर्षायोग स्थापित किया। मेरी आशाओं के मंदिर पर चढ़ें स्वर्णिम कलश के अनुसार इस वर्षायोग के मध्य गुरुभक्ति का जो अपूर्व अवसर मुझे प्राप्त हुआ, उस गुरु उपकार को मैं जीवन भर भूल नहीं सकता। इस चातुर्मास में प्रीतविहार जैन समाज ने भी माताजी से सर्वतोमुखी लाभ प्राप्त किया है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रचार की एक नई कड़ी जुड़ी-

इस वर्षायोग के अन्तर्गत न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 अगस्त से 31 अगस्त 2000 तक होने वाले सहस्राब्दि विश्वशांति शिखर सम्मेलन हेतु प्राप्त निमंत्रण के आधार पर पूज्य माताजी ने अपने शिष्य कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

को दिगम्बर जैन धर्माचार्यों के प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका भेजा। वहाँ उन्होंने लगभग 150 देशों से पधारे 75 धर्मों के 1500 धर्माचार्यों, अध्यात्मवेत्ताओं एवं राजनेताओं के मध्य भगवान ऋषभदेव के अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव, विश्वमान्य अहिंसा धर्म का परिचय एवं पूज्य माताजी का आशीर्वाद संदेश प्रस्तुत किया।

प्रयाग यात्रा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक का ऐतिहासिक निर्णय-

भगवान ऋषभदेव की दीक्षा भूमि प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर समिति ने तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली नामक नूतन तीर्थ के निर्माण हेतु निर्णय लिया। प्रयाग में उस तीर्थ स्थल पर दीक्षा कल्याणक प्रतीक में वटवृक्ष के नीचे ध्यानस्थ ऋषभदेव भगवान की एक खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने का, केवलज्ञान के प्रतीक में गंधकुटी में चार जिनप्रतिमाओं के विराजमान करने का और क्षेत्र के मध्य में 72×108 फुट में 50 फुट ऊँचा एक कैलाश पर्वत निर्मित करने का निर्णय किया गया। कैलाश पर्वत के ऊपर भगवान ऋषभदेव की माणिक्यवर्ण जैसी 14 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित की जायेगी। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 4 फरवरी से 8 फरवरी 2001 तक होगा तथा कैलाशपर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा का 8 फरवरी 2001 को 1008 महाकुंभों से मस्तकाभिषेक सम्पन्न होगा। प्रयाग में होने वाले इस महोत्सव में सान्निध्य प्रदान करने हेतु पूज्य माताजी ने इस चातुर्मास के पश्चात् 1 नवम्बर 2001, कार्तिक शुक्ला पंचमी को प्रयाग यात्रा के लिए प्रीतविहार से मंगल विहार करने का निर्णय लिया। प्रयाग-तीर्थ की चयन समिति में भी मुझे कोषाध्यक्ष पद पर मनोनीत कर यथाशक्ति कार्य करने का सौभाग्य दिया गया है।

उपर्युक्त समस्त कार्यक्रमों में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं सान्निध्य व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन एवं क्षुल्लक धर्मदिवाकर श्री मोतीसागर जी महाराज का निर्देशन एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का विशेष दिशानिर्देश रहा है।

गुरु प्रेरणा ही मेरे जीवन का सम्बल है-

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्ष परम्परानुसार प्रेरणा के आधार पर इस ऋषभदेव कमल मंदिर में महिलाओं द्वारा अभिषेक मान्य रहेगा तथा पूजा पद्धति के अन्तर्गत वर्तमान दिगम्बर जैन आम्नाय में प्रचलित

तेरहपंथ एवं बीसपंथ का कोई भेद-भाव नहीं रखा गया है।

चूँकि मैंने पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं अपनी मातेश्वरी आनन्दमती जैन की भावनानुसार व्यक्तिगतरूप से इस कमल मंदिर का निर्माण करवाकर एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि महोत्सव अपनी यथाशक्ति अनुसार सम्पन्न कराये हैं अतः इसका पूर्ण स्वामित्व एवं समस्त व्यवस्थाओं का संचालन मेरे व्यक्तिगत अधिकार क्षेत्र में ही रहेंगे।

इन सभी कार्यक्रमों को सम्पन्न कराने में मुझे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता जैन का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा तथा सुपुत्री कु. अनामिका, कु. अंतिमा एवं चिरंजीव अतिशय जैन सदा प्रसन्नचित रहे हैं।

यह जैन मंदिर, इसमें विराजमान जिनेन्द्र भगवान एवं प्रेरणादायिनी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हम सबका सदा कल्याण करें, यही हार्दिक भावना है।

दिनाँक-1 नवम्बर 2000

धर्मपुत्र अनिल कुमार जैन
सुपुत्र स्व. श्री सलेकचंद जैन
कमल मंदिर
डी-107, प्रीतविहार, दिल्ली

श्रावकों की त्रेपन क्रियाएँ–

गुणवयतवसमपडिमा-दाणं, जलगालणं अणत्थमियं।
दंसणणाणचरित्तं, किरिया तेवण्ण सावया भणिया।।24।।

(रयणसार गाथा-149)

गुण व्रत तप समता दान और, प्रतिमा आदिक बतलाई हैं।
जलगालन रात्रीभुक्ति-त्याग, रत्नत्रयरूप कहाई हैं।।
ये भेदरूप श्रावक की त्रेपन, क्रिया कहीं हैं आगम में।
इनके त्रेपन व्रत भी होते, जो बतलाए जिनशासन में।।24।।

राजधानी दिल्ली से सन् २००० में प्रयाग की ओर मंगल विहार एवं उसके बाद के कार्यक्रमों में मेरी भूमिका एवं सहयोग

पूज्य माताजी के निर्णयानुसार पूज्य माताजी का राजधानी दिल्ली से नवम्बर 2000 में प्रयाग की ओर विहार हो गया और प्रयाग में ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग'' इस नाम से तीर्थ की स्थापना, फरवरी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभमहामस्तकाभिषेक तथा महाकुंभ स्थल पर 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाने के कार्यक्रम प्रभावना के साथ पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुए। इस तीर्थ पर मुझे पूज्य माताजी की प्रेरणा से कीर्तिस्तंभ बनवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसके बाद अप्रैल में प्रयाग से विहार करके पूज्य माताजी का ससंघ दिल्ली पुनः पदार्पण होता है और वर्ष 2001 का चातुर्मास माताजी का दिल्ली में सम्पन्न होता है। इस चातुर्मास के मध्य फिरोजशाह कोटला मैदान में पूज्य माताजी के सान्निध्य में विश्वशांति महावीर विधान प्रभावना के साथ सम्पन्न करके छब्बीसौवें महावीर जन्मजयंती वर्ष में एक प्रभावना की कड़ी जुड़ गई।

चातुर्मास सम्पन्न होने के बाद भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के जीर्णोद्धार एवं विकास हेतु पूज्य माताजी का दिल्ली से 15 फरवरी 2002 को कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार हो गया तथा प्रयाग तक पूज्य माताजी चातुर्मास के पूर्व पहुँच सकीं। अतः तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग में सन् 2002 का वर्षायोग माताजी का ससंघ सम्पन हुआ, उसके बाद वर्षायोग सम्पन्न करके नवम्बर 2002 में प्रयाग से कुण्डलपुर की ओर वाराणसी, आरा, पटना होते हुए पूज्य माताजी का 29 दिसम्बर 2002 को कुण्डलपुर में मंगल पदार्पण होता है।

प्रयाग वर्षायोग के मध्य ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन भाई जी (वर्तमान में पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी) मैं (अनिल कुमार जैन) कुण्डलपुर में जमीन देखने-खरीदने के लिए कई बार गयें और जमीन का सौदा तय होने पर रजिस्ट्री कराने में भी बराबर जाने का और हर प्रकार से कुण्डलपुर

विकास हेतु सहयोग करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी ने कुण्डलपुर की कमेटी में मुझे महामंत्री एवं पटना के श्री अजय कुमार जैन को महामंत्री ऐसे 2 महामंत्री बनाये। 29 दिसम्बर 2002 को पहुँचते ही कुण्डलपुर में क्रय की हुई भूमि में भगवान महावीर मंदिर निर्माण का शिलान्यास किया गया और मंदिर का कार्य तेजी से करके ऊपर प्लेटफार्म बनाकर भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान की गई और 7 से 12 फरवरी 2003 में पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूज्य माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुई, यह ऐसा चमत्कारिक कार्य हुआ है, जिसका वर्णन करना संभव नहीं है, मात्र 22 माह में भगवान महावीर मंदिर, नवग्रहमंदिर, ऋषभदेव मंदिर, त्रिकाल चौबीसी 3 मंजिला मंदिर, नंद्यावर्त महल एवं यात्री निवास के 35 फ्लैट, भोजनालय, ऑफिस, बाउण्ड्रीवाल यह निर्माण हुए एवं पूज्य माताजी ने कच्चे टीन के कमरों में प्रवास करके 2 चातुर्मास भी कुण्डलपुर में सम्पन्न किये। इन सब कार्यों में मुझे सहयोग देने का भरपूर सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद मांगीतुंगी प्रतिमा निर्माण हेतु एवं जो-जो कार्य पूज्य माताजी की आज्ञा से पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामीजी ने हाथ में लिए हैं उन सभी में कंधा से कंधा मिलाकर साथ जाने का एवं तन-मन-धन से सहयोग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मैं पूज्य माताजी के प्रति शतशः नमन करता हूँ कि पूज्य माताजी के आशीर्वाद से मेरा मनुष्य जन्म सफल हो गया है। मैं और मेरा सम्पूर्ण परिवार पूज्य माताजी के इस उपकार को कभी भूल नहीं सकेगा। अभी मुझे एवं मेरी बेटी श्रीमती अनामिका को इस संघ के संघपति अर्थात् संघ की सेवा करने का भी सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इन सभी पुण्यवर्धन क्रियाओं में पूज्य माताजी का आशीर्वाद हमेशा हमारे ऊपर, हमारे परिवार पर बना रहे, यही हमारी मंगल कामना है।

जुलाई 2020

-धर्मपुत्र अनिल कुमार जैन
कमल मंदिर, प्रीतविहार, दिल्ली

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई.....

दर्शन कर लो जिनवर का, उपवासों का फल मिलता।
करो वन्दन प्रभु के सामनें, मनवाञ्छित कार्य सभी बने।।दर्शन....।।

जैसे सूरज अंधकार जग का हरे।
हर मानव के मन में उजियाला भरे।।
वैसे ही जिनसूर्य तिमिर मन का हरे।
सम्यग्दर्शन का प्रकाश मन में भरे।।

जिनचन्द्र का, जिनसूर्य का-2,
दर्शन पापों को काटता, दर्शन देता सुख शाश्वता।
दर्शन कर लो जिनवर का, उपवासों का फल मिलता।।1।।

जिनमंदिर नवदेव में है इक देवता।
चैत्यभक्ति में गणधर देव ने है कहा।।
इसी तरह जिनप्रतिमा भी है देवता।
जिनके दर्शन से पद मिलता देव का।।

जिनचन्द्र का, जिनसूर्य का-2
दर्शन पापों को काटता, दर्शन देता सुख शाश्वता।
दर्शन कर लो जिनवर का, उपवासों का फल मिलता।।2।।

इक मेंढक प्रभु वीर के दर्शन को चला।
कमल पुष्प भक्ति से मुख में ले चला।।
पथ में ही मरकर वो देवता बन गया।
वही ''चन्दनामती'' प्रेरणा बन गया।।

जिनचन्द्र का, जिनसूर्य का-2,
दर्शन पापों को काटता, दर्शन देता सुख शाश्वता।
दर्शन कर लो जिनवर का, उपवासों का फल मिलता।।3।।

भगवान श्री ऋषभदेव की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय वृषभेष प्रभो, स्वामी जय वृषभेश प्रभो ।
पंचकल्याणक अधिपति, प्रथम जिनेश विभो।।ॐ जय.।।टेक.।।

वदि आषाढ़ दुतीया, मात गरभ आए। स्वामी.....।
नाभिराय मरुदेवी के संग, सब जन हरषाए।।ॐ जय.।।1।।

धन्य अयोध्या नगरी, जन्में आप जहाँ।स्वामी.....।
चैत्र कृष्ण नवमी को, मंगलगान हुआ।।ॐ जय.।।2।।

कर्मभूमि के आदि विधाता, आप ही कहलाए।स्वामी .....।
असि मसि आदि क्रिया बतलाकर, ब्रह्मा कहलाए।।ॐ जय.।।3।।

नीलांजना का नृत्य देखकर, मन वैराग्य हुआ।स्वामी.....।
चैत्र कृष्ण नवमी को, दीक्षा धार लिया।।ॐजय.।।4।।

सहस वर्ष तप द्वारा, केवल रवि प्रगटा।स्वामी.....।
फाल्गुन कृष्ण सुग्यारस, समवसरण बनता।।ॐ जय.।।5।।

माघ कृष्ण चौदस को, मोक्ष धाम पाया।स्वामी.....।
गिरि कैलाश पे जाकर, स्वातम प्रगटाया।।ॐजय.।।6।।

ऋषभदेव पुरुदेव प्रभू की, आरति जो करते।स्वामी.....।
क्रम क्रम से ''चंदनामती'' वे, पूर्ण सुखी बनते।।ॐजय.।।7।।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्रचक्रवर्ती
श्री शांतिसागर जी महाराज

आचार्य श्री शांतिसागर जी के
प्रथम पट्टाधीश एवं पूज्य गणिनी
श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षागुरु
आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

प्रीतविहार, दिल्ली में निर्मित कमल मंदिर

978-93-87891-42-5